डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

ऐतिहासिक महत्व का पौष्टिक फल

कुछ दिन पहले एक ऐसी खबर पढ़ी कि मेरा दिल इंग्लैंड के एक फल विक्रेता स्टीवन थोबर्न के प्रति हमदर्दी से भर गया। एक अदालत ने उसे एक आधुनिक ज़ुर्म के लिए सज़ा सुनाई थी।

इस भले आदमी का जुर्म यह था कि उसने केले किलोग्राम के हिसाब से बेचने की बजाय पाउण्ड और आउन्स के हिसाब से बेचे थे। सण्डरलैण्ड की नगर परिषद् ने युरोपीय कानून के तहत उस पर मुकदमा चलाया था। कानून का तकाज़ा है कि पूरे युरोपीय संघ में सिर्फ मीट्रिक प्रणाली का ही उपयोग होना चाहिए। न्यायाधीश ने अपने फैसले में टिप्पणी की थी कि 'शायद ये केले इतिहास के सबसे प्रसिद्ध केले होंगे।' उन्होंने यह भी कहा कि 'यदि सारे सदस्य राष्ट्र अपनी-अपनी कानूनी सनक पर चलने की ठान लें तो (इस फल विक्रेता की करतूत) युरोपीय संघ की अवधारणा को ही नष्ट कर देगी।'

अदालत की अवमानना की इच्छा न होते हुए भी उक्त न्यायाधीश से जिरह करना ज़रूरी है। दरअसल ये केले कानूनी इतिहास या किसी भी इतिहास के सबसे प्रसिद्ध केले नहीं हैं। वह गरीब तो अपने ग्राहकों के लिए आसान ढंग से केले बेचकर रोज़ी-रोटी कमा रहा था कि कानून आड़े आ गया। वह फल विक्रेता ऐसे माप-तौल का इस्तेमाल करने का प्रयास कर रहा था जो ग्राहकों को सुविधाजनक लगे। लोगों को ऐसे मामलों में बदलने में वक्त लगता है। ऐसे मामलों में अदालतों को चाहिए कि वे लोगों को नई शब्दावली अपनाने हेतु वक्त दें। क्या थोबर्न से यह नहीं कहा जा सकता था कि वह मूल्य सूची में किलोग्राम व पाउण्ड दोनों का उपयोग करे?

मानकीकरण बहुत महत्वपूर्ण है और इस पर ज़ोर भी